पर अनेक प्रकार से प्रयास किए जा रहें हैं, किन्तु उनके आवास के आस-पास रहने वाले द्वीपवासियों के साथ-साथ यहाँ के स्थानीय निवासी और पर्यटकों को भी उनके उत्थान के प्रति जागरूक होना पड़ेगा। जारवा और उनकी परम्परा व संस्कृति के अस्तित्व को बनाए रखते हुए उनका विकास करना ही श्रेयकर और सर्वोपरि होना चाहिए।

सभी भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक है तो वो देवनागरी ही हो सकती है ।

– जस्टिस कृष्णास्वामी अय्यर

रिश्ते

डा. एन. लक्ष्मी,
असिस्टेंट प्रोफेसर, जे.एन.आर.एम, पोर्ट ब्लेयर

ये रिश्ते भी अजीब हैं, टूटने के निशान तक नहीं मिलते !
फेविकॉल का मजबूत जोड़ तो नहीं,
जो कभी न टूटे ???
अरे भाई !
यह तो बस रिश्ता है.....
टूटने के लिए हरदम लालायित ।
एक बार जो टूट जाए, फिर
फेवीक्विक या फेवी बाण्ड भी रहे नाकामयाब !
तो बताओ ?है, किसी में दम ?
जो दिखाएँ, टूटे इस बाण्ड को जोड़ ?
शीशा तो फिर भी अपनी बात मान
फेवी बाण्ड का दोस्त बने 'औ' लगे गले, पर
ये तो रिश्ता है !
अरे ! ये तो वह रिश्ता है जिसके रचयिता
अज्ञात नहीं,
जिसमें जो पहले प्यार कूट-कूटकर
देता था संदेश भाईचारे का, होली लगती अपने घर की
आस-पड़ोसी लगते भाई-बंधु.....
पर, आज ?
न कोई अपना, 'औ' न कोई पराया.
स्वार्थ, अंतर्मुखी 'औ' घुटन सी उसाँसे भरते इस
दिल के चारों कोनों में नफ़रत की चिंगारी, जो
जंगल की उस आग की तरह करती
तहस-नहस,
प्रेम-प्यार स्नेह-ममता से भरी इस प्याली में,
जहरीले राख मिलाकर, वह,
कैसे जोड़ पाएगा ?
दूर-दूर तक जिसके टूटने के कोई निशान नहीं, तो
बेचारे फेवी बाण्ड और फेवीक्विक करें क्या ???
रिश्ते
मैंने बहुत कोशिश की चुनने की
उन बिखरे तिनकों को जो
कभी हुआ करते थे अपने घर में
अपने दिल में और अपने ही आँगन में
पर हुआ क्या ?आखिर,
टूटी इस कमर को लेकर अब
कहाँ तक मैं झुककर चुन पाऊँगी
उन तिनकों को जो इस दिल से दूर, अपने
आँगन से दूर कहीं दूर और दूर तक बिखर गई
पर इस टूटी कमर में अभी-भी है आस चुनने की
उन तिनकों को जो है अपने ही आस
'औ' अपने ही पास !